Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchinspiration.com; Email: publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 3, Issue-II
March 2018
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)
e-ISJN: A4372-3069

अनुसूचित जाति व जनजाति के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक व व्यावसायिक रूचि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) रितेश जैन
प्राचार्या
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एजूकेशन, इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेड़ी, इन्दौर (म.प्र.)

सारांश

शिक्षा का मुख्य कार्य बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास करना। शिक्षक बालकों के व्यक्तित्व का विकास करते हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक आदि। बालकों में कुछ मूल प्रवृत्तियां होती हैं जैसे जिज्ञासा, भूख, प्यास, आत्मप्रदर्शन और सामूहिक जीवन में और अन्य सभी मूल प्रवृत्तियां जन्मजात होती हैं। बालकों को नियंत्रित और अच्छी प्रेरणाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा बालकों को व्यावसायिक जीवन के लिए तैयार करते है। आज का बालक कल का नागरिक है। बालक 9वीं कक्षा के बाद जब 10वीं कक्षा में आता है तो वह अपनी व्यावसायिक रूचि को ध्यान में रखकर अपना लक्ष्य निर्धारित करता है। लेकिन अनुसूचित जाति का बच्चा पढ़ने में अच्छा है लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण कभी–कभी उसे अपनी भावनाओं को दबाना पड़ता है। वह अपनी रूचि के अनुसार व्यावसायिक कार्य नहीं कर सकता है इसलिए सरकार द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालकों के लिए अनेक योजनाएं लागू की गई हैं। अतः शिक्षण के उद्देष्य की पूर्ति और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए विशिष्ट व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। बालक में शिक्षा के द्वारा बुद्धि, संवेगात्मक प्रायोगिक तथा सृजनात्मक, कल्पनाशील, मित्रवत व्यवहार, अनुशासन, भावनात्मक नेतृत्व का गुण का विकास किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सुविधा एवं सामर्थ्य की दृष्टि से प्रतिदर्श के चयन में रेण्डम विधि को अपनाया गया। सम्पूर्ण प्रतिदर्श में कुछ 200 इकाइयों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 50–50 छात्र–छात्राओं को चुना गया। शोधार्थी ने इस अध्ययन के लिए डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित दो रूचि प्रपत्रों का चुनाव किया है, इसमें से एक शैक्षिक रूचि प्रपत्र तथा दूसरा व्यावसायिक रूचि प्रपत्र है। शैक्षिक रूचि एवं व्यावसायिक रूचि के परिणामों की तालिकाबद्ध करने पर व उनके प्राप्तांकों एवं प्रतिशतांक का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक रूचि दोनों में व्यावसायिक रूचि उच्च स्तर की है।

पारिभाषिक शब्द – शैक्षिक रूचि, व्यावसायिक रूचि, मध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

वैदिककाल में वर्ण व्यवस्था व्यक्तियों के कर्म के आधार पर की गई थी परन्तु धीरे–धीरे यह व्यावसायिक कर्म प्रधान न रहकर जन्म आधारित जाति में परिवर्तित हो गई। जाति के अनुसार कार्य निर्धारित होने लगे और वे व्यक्ति

जो शुद्ध वर्ग के थे धीरे–धीरे उन्हें समाज की मुख्य धारा से पृथक कर दिया गया तथा उनका सामाजिक तथा शैक्षिक विकास नहीं हो पाया बल्कि उनकी स्थिति और भी खराब होती चली गई।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालकों को विभिन्न प्रतियोगिता, परीक्षा के पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था उच्च शिक्षा आर्थिक सहायता छात्र–छात्राओं के लिए आवास की सुविधा शिक्षण शुिल्क में छूट, पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति आदि की सुविधा दी गई। इन सब सुविधाओं के परिणाम स्वरूप पिछले छः दशक में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्याथियों ने प्रगति की है। अतः आज वे शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में आगे आये चाहे वह मेडिकल क्षेत्र हो या इंजिनियरिंग का कम्प्यूटर का क्षेत्र हो या टेक्नालॉजी का हर एक क्षेत्र में आगे आये हैं। अन्य लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। भारत वर्ष में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षण ले रहे हैं।

औचित्य –

भारतीय जनजाति शासन प्रणाली में यह आवश्यक है कि जनतंत्र के समृद्ध होने पर ही हर कोई व्यक्ति सुखी हो सकता है अतः व्यावसायिक शिक्षा द्वारा लोककल्याण की भावना का विकास करना आवश्यक होगा। तभी छात्र–छात्राओं को अपनी इच्छानुसार व्यवसायिक रूचि के उद्देश्यों पूर्ति कर सकेंगे जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति अपनी व्यवसायिक क्रियाओं द्वारा जनता के कल्याण के साधनों में वृद्धि कर सके। इस तरह हम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बालकों की व्यवसायिक रूचि के बारे में जान सकेंगे और उनकी आवश्यकता के साधनों को जुटा पाऐंगे। शिक्षा का ज्ञान होना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि आज आधुनिक वैज्ञानित युग में इतनी प्रगति कर ली है कि आज इस युग को सूचना क्रान्ति का युग कहा जाने लगा। आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति ने औद्योगिकीकरण में जटिलता उत्पन्न कर दी है। आज जो उद्योग एवं व्यवसाय पनप रहे हैं इनमें वैज्ञानिक प्रगतियों ने बहुत योग दिया है। एक पूर्व प्रचलित व्यवसाय सीमित और न्यून थे। उस समय व्यवसाय घर का वातावरण सीखा देता था और उनमें व्यवसायिक कुशलता आ जाती थी। परन्तु मनोविज्ञान आविष्कारों के आधार पर आजकल विभिन्न व्यवसाय उपलब्ध हैं जो व्यक्तियों की अलग–अलग रूचियों तथा शक्तियों को संतुष्ट करते हैं। इन सबकी यकायक शिक्षण व्यवस्था करना सरल कार्य नहीं होता है तथा पृथक–पृथक व्यावसायिक शिक्षा के संगठन तथा तथा व्यवसाय की बहुत आवश्यकता है। अतः व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों के बीच जाकर व्यावसायिक शिक्षा के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण है यह जानना बहुत जरूरी है। इससे उनकी व्यावसायिक रूचियों के प्रति जागरूकता का पता चलता है साथ ही आज के वर्तमान सूचना क्रान्ति का क्या प्रभाव पड़ा उसकी भी जानकारी प्राप्त हो सकेगी। इस प्रकार अनेक विद्वान अपने अलग–अलग शोध के द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों पर शोध किये गये हैं।

चन्दर ने सन् 1990 में तथा दास ने 1991 में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को लेकर अपना शोध कार्य किया है। इसी कार्य को गौतम ने 1988 में किया था।

परलीकर ने 1973 में शोध कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कक्षा 9वीं के छात्रों की व्यावसायिक योग्यता और पसंद अभिवृत्ति पर निर्भर होती है।

रेड्डी ने 1979 में 'किशारों में व्यावसायिकता के प्रति रूचि' पर शोध किया गया है।

जया पुराने ने 1982 में कक्षा 9वीं के छात्रों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों पर शोध किया गया।

गौतम (1988) ने ''डेल्टा स्टेज के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि तथा उनके भविष्य के पाठ्यक्रमों में निहितार्थ का अन्वेषण'' पर शोध कार्य किया है।

चन्दर (1990) ने ''हाई स्कूल के आदिवासी विद्यार्थियों का शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि पैटर्न एवं उनकी बुद्धि सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बंध का अध्ययन नामक शीर्षक से एक शोध कार्य किया। **दास आर.एस. (1991)** ने ''प्राथमिक शिक्षकों में व्यावसायिक अभिरूची का विष्लेषणात्मक अध्ययन'' एम.फिल. शिक्षा नागपुर विष्वविद्यालय नामक शोध अध्ययन किया।

सोढ़ी (1988) ने ''चंढ़ीगढ़ की किशोरियों की व्यवसायिक रूचि एवं पेशागत पसंद'' नामक शोध किया।

इस तरह कुछ और विद्वानों ने यह भी शोध किया है। अरोड़ा ने 1988 में कक्षा सात के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिसक रूचियों शोध कार्य पर कार्य किया। इस प्रकार लेखक लालबाबू प्रसाद ने 2007–2008 में सामान्य जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग को लेकर किया गया है।

इस तरह पूर्व शोध को देखन से यह तथ्य सामने आते हैं कि आज की वर्तमान स्थितियों में भी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को देखा जाए और पूर्व शोध को देखा जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में थोड़ा सुधार हुआ है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से एवं पूर्व शोध के विष्लेषण देखने पर यह बात सामने आती है कि आज की स्थिति में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को एक साथ लेकर देखा जाए तो व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार के विस्तृत शोधों का अभाव बना हुआ है।

समस्या कथन –

'' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बाल–बालिकाओं का शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन''

शोध का उद्देष्य –

'' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बाल–बालिकाओं का शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'' करना।

उपकरण –

शोधार्थी ने इस अध्ययन के लिए डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित दो रूचि प्रपत्रों का चुनाव किया है, इसमें से एक शैक्षिक रूचि प्रपत्र तथा दूसरा व्यावसायिक रूचि प्रपत्र है। ये दोनों प्रपत्र शैक्षिक व व्यावसायिक रूचियों का मापन करने के लिए भली भांति सक्षम है। दोनों प्रपत्रों की भाषा सरल है तथा दोनों प्रमाणिकृत परीक्षण है।

प्रदत्तों का संकलन –

इस प्रपत्र में अधिकतम अंक प्रत्येक शैक्षिक विषय को मिलाकर 14 अंक एवं कम से कम 0 है। प्रत्येक शैक्षिक विषय पर लगाये गये सही के निशान पर प्रतिक्रियाओं की लम्बी स्थिति में प्रथम क्षेत्र के प्रथम खाने में (शैक्षिक नं.1) की 2 नम्बर के (√) सही निशानों की (शैक्षिक नं.2) के शैक्षिक खाने में प्रत्येक के लिए एक–एक अंक देखकर (नं 1+2) के नम्बरों की उस शैक्षिक विषयों के सामने जोड़कर लिख देते हैं। यह प्रक्रिया पूर्ण प्रपत्र में जारी करते रहते हैं जब तक सम्पूर्ण प्रपत्र का मूल्यांकन न हो जाये।

अनुसंधान की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि के द्वारा वर्तमान स्थितियों में प्रचलित व्यवहारों, विष्वासों, दृष्टिकोण और अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर व परतंत्र चर निम्नलिखित है –

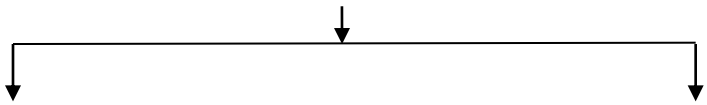

स्वतंत्र चर	आश्रित चर (स्वतंत्र चर)
माध्यमिक विद्यालय, अनुसूचित जाति व जनजाति के विद्यार्थी	शैक्षिक व व्यावसायिक रूचियां

न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सुविधा एवं सामर्थ्य की दृष्टि से प्रतिदर्श के चयन में रेण्डम विधि को अपनाया गया। सम्पूर्ण प्रतिदर्श में कुछ 200 इकाइयों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 50–50 छात्र–छात्राओं को चुना गया।

प्रदत्तों का विष्लेषण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों का विष्लेषण प्रतिशत एवं गुणात्मक विष्लेषण किया गया। निरीक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को व्यवस्थित कर व्याख्या की गई तथा प्रदत्तों का विष्लेषण शैक्षिक रूचि प्रपत्र एवं व्यावसायिक रूचि प्रपत्र विष्लेषण विधि द्वारा किया गया। साथ ही साथ अभिलेखो, परिक्षाओं, पूर्व शोध के क्षेत्रों से प्राप्त आंकड़ों का विष्लेषण उद्देष्यानुसार किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की विवेचना

व्यावसायिक रूचि प्रपत्र –

तालिका क्रमांक–1
व्यावसायिक रूचि परिणाम तालिका

विद्यार्थियों की	(L_1) Law	(Sc_1) Science	(E_1) Education	(C_1) Commerce Science	(Co_1) Commerce	(A_1) Administration	(Ag_1) Agriculture	(P_1) Philanthropist	(S_1) Social	(H_1) House Old Art
प्राप्तांक	197	259	282	251	184	266	191	303	261	239
प्रतिशतांक	6.56 %	8.36%	9.4%	8.36%	6.13%	8.66%	6.36%	10.1%	8.7 %	7.96 %

विश्लेषण –

व्यावसायिक रूचि परिणाम तालिका क्रमांक–1 के अनुसार विवेचना निम्नलिखित है–

- विषय क्षेत्र–L_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 197 तथा प्रतिशतांक 6.56 है। यह दर्शाते हैं कि कानून विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि निम्न स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–Ag_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 259 तथा प्रतिशतांक 8.36 है। यह दर्शाते हैं कि विज्ञान विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।

- विषय क्षेत्र–E_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 282 तथा प्रतिशतांक 9.4 है। यह दर्शाते हैं कि शिक्षा विज्ञान विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–C_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 251 तथा प्रतिशतांक 8.36 है। यह दर्शाते हैं कि वाणिज्य विज्ञान में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–Co_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 184 तथा प्रतिशतांक 6.13 है। यह दर्शाते हैं कि वाणिज्य तत्व में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि निम्न स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–A_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 266 तथा प्रतिशतांक 8.66 है। यह दर्शाते हैं कि प्रशासनिक विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–AG_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 191 तथा प्रतिशतांक 6.36 है। यह दर्शाते हैं कि कृषि विज्ञान विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–P_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 303 तथा प्रतिशतांक 10.1 है। यह दर्शाते हैं कि परोपकारी विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि उच्चतम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–S_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 261 तथा प्रतिशतांक 8.7 है। यह दर्शाते हैं कि सामाजिक विज्ञान विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–H_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 239 तथा प्रतिशतांक 7.96 है। यह दर्शाते हैं कि परोपकारी विषय में विद्यालयों की व्यवसायिक रूचि मध्यम स्तर की है।

शैक्षिक रूचि –

तालिका क्रमांक–2

शैक्षिक रूचि तालिका क्रमांक–2

विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि	Ag_1 Agriculture	Co_1 Commerce	FA_1 Fine Art	Hs_1 Home Science	Hu_1 Human Science	A_1 Artician	Te_1 Technical
प्राप्तांक	194	191	203	223	214	195	207
प्रतिशतांक	6.46%	6.36%	6.76%	7.43%	7.13%	6.5%	6.9%

विवेचना –

शैक्षिक रूचि तालिका क्रमांक–2 के अनुसार परिणाम विवेचना निम्नलिखित है–

- विषय क्षेत्र–Ag_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 194 है जिनका प्रतिशतांक 6.46 है जो कि यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि निम्न स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–Co_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 191 है जिनका प्रतिशतांक 6.36 है जो कि यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि निम्न स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–FA_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 203 है जिनका प्रतिशतांक 6.76 है जो कि यह दर्शाता है कि कलात्मक विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि निम्न स्तर की है।

- विषय क्षेत्र–Hs_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 223 है जिनका प्रतिशतांक 7.43 है जो कि यह दर्शाता है कि गृह विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि उच्चतम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–Hu_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 214 है जिनका प्रतिशतांक 7.13 है जो कि यह दर्शाता है कि मानव शास्त्र विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि मध्यम स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–A_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 195 है जिनका प्रतिशतांक 6.5 है जो कि यह दर्शाता है कि कलात्मक विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि निम्न स्तर की है।
- विषय क्षेत्र–Te_1 में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 207 है जिनका प्रतिशतांक 6.9 है जो कि यह दर्शाता है कि तकनीकी विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि निम्न स्तर की है।

परिणामों की व्याख्या –

तालिका क्रमांक 1 एवं क्रमांक 2 का विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि के क्षेत्र P_1 (परोपकारी) के अन्तर्गत प्राप्तांक 303 पाये गये जिसका प्रतिशतांक 10.1 रहा जो कि यह दर्शता है कि परोपकारीता में विद्यार्थियों की रूचि उच्च स्तर की है एवं विषय क्षेत्र Co_1 (वाणिज्य) में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 191 है जिनका प्रतिशतांक 6.13 है। यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि वाणिज्य विषय में निम्न स्तर की है।

इसी प्रकार विषय क्षेत्र Hs_1 (गृह विज्ञान) विद्यार्थियों के प्राप्तांक 223 है जिनका प्रतिशतांक 7.43 है इससे ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि गृह विज्ञान में उच्च स्तर की है एवं विषय क्षेत्र A_1 (कलात्मक) में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 195 है तथा प्रतिशतांक 6.5 है। इससे ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक रूचि दोनों के प्रपत्र देखने पर यह ज्ञात होता है कि व्यावसायिक रूचि उच्च स्तर की है।

निष्कर्ष –

शैक्षिक रूचि एवं व्यावसायिक रूचि के परिणामों की तालिकाबद्ध करने पर उनके प्राप्तांकों एवं प्रतिशतांक का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि विषय क्षेत्र $P1_1$ (परोपकारी) में विद्यार्थियों के प्रतिशतांक 10.1 है जो कि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि की शैक्षिक रूचि गृह परोपकारीता विज्ञान में उच्च स्तर की है एवं विषय क्षेत्र A_1 (कलात्मक) में विद्यार्थियों के प्राप्तांक 195 है तथा प्रतिशतांक 6.5 है। इससे ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक रूचि दोनों के प्रपत्र देखने पर यह ज्ञात होता है कि व्यावसायिक रूचि उच्च स्तर की है।

शैक्षिक निहितार्थ –

शिक्षक हेतु –

प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के उपरांत शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में सुधार करते हुए विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

पालकों हेतु – इस शोध के अध्ययन से माता–पिता अपने बालकों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि की ज्ञात कर उन्हें उचित दशा में अग्रसर करने हेतु दिशा निर्देश करते हुए पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध करा सकते हैं।

शोधार्थी हेतु –

इस शोध के माध्यम से भविष्य में शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग कर आकांक्षा स्तर का अध्ययन कर सकते हैं।

भविष्य में शोध हेतु सुझाव –

1. व्यवसायिक रूचि एवं शैक्षिक रूचि स्तर के अतिरिक्त अन्य चरों के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
2. किसी अन्य न्यादर्श पर या जनसंख्या के बड़े न्यादर्श पर शोध कार्य कर सकते हैं।
3. माध्यमिक स्तर के साथ ही अन्य स्तरों पर भी इन चरों का अध्ययन किया जा सकता है।

उपसंहार –

आज के युग में शिक्षा का बहुत ही महत्व है। प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा का अत्यंत आवश्यकता होती है। शिक्षा का अर्थ व्यक्तित्व के समग्र विकास से है अर्थात् सांस्कृतिक मूल्यों से लाभ पाने के लिए आवश्यक सुप्त शक्तियों की प्रकाशित करने की प्रक्रिया है। एक अच्छी शिक्षा का ग्रहण करना व्यक्ति की रूचि पर निर्भर करता है कि व्यक्ति में रूचि है या नहीं आदि व्यक्ति में रूचि का शिक्षा पर असर बहुत पड़ता है और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में भी रूचियों को प्रभाव पड़ता है। यह बहुत कुछ उसकी रूचि के अनुकूल ही विषय दिलाये जाये ताकि वह अपनी रूचि के विषय को ध्यानपूर्वक पढेगा तो वह आगे चलकर व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर लेगा। अतः रूचि के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, एस.के. : (1980) '*शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत*', मार्डन पब्लिकेशन, मेरठ।
2. नागर, वीनू : (2010) '*बाल विकास*', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. शर्मा, एस.एल. : (1973) '*आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान*,' एच.वी. भार्गव बुल हाऊस, आगरा ।
4. शर्मा, राजकुमारी एवं शर्मा, एच.एस. (2005), '*प्रागतिशील/उदीयमान भारत में शिक्षा*.' राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा
5. श्रीमाली, एम.एस. : (1996) '*शिक्षा मनोविज्ञान*', रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
6. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ (2005), '*भाषा शिक्षण*.' माहेष्वरी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. श्रीवास्तव, डी.ए. : (2004) '*मनोविज्ञान अनुसंधान एवं मापन*', प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
8. तिवारी, ए.एन. : (1974) '*शिक्षा मनोविज्ञान' भाग–दो*, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
9. तिवारी, के.के. : (1993) '*भारतीय शिक्षा विकास और समस्याएँ*,' होराईजन पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
10. वर्मा, जी. एस. (2005) '*उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*.' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ